arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:05 PM Page 150

उपमन्यु हजारिका

नानाजी के जीवन का सबसे सरल लेखा-जोखा यह है कि उन्होंने गांधीजी की आत्मनिर्भर ग्रामीण संकल्पना को सिद्ध कर दिया। उनका ग्रामीण भारत के विकास का माडल आर्थिक व नैतिक दोनों ही धरातल पर खरा है।

नानाजी ने दिखाया आत्मनिर्भरता का रास्ता

राजनीति से संन्यास लेने के बाद नानाजी ने अपने जीवन के अंतिम दो दशक जिस चित्रकूट में बिताए, वह वह महात्मा गांधी के आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदाय के आदर्श की व्यवहार्यता को सिद्ध करता है। ग्रामीण भारत के विकास का एक मॉडल उनको निस्वार्थ सेवा में पाया जा सकता है।

नानाजी देशमुख की विरासत का एक साधारण आकलन यह होगा कि उन्होंने महात्मा गांधी के आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदाय के आदर्श की व्यवहार्यता को निर्णायक तौर पर सिद्ध करके दिखा दिया और वह भी मात्र अंतिम दो दशकों में। उस दौर में जब 65 प्रतिशत जनसंख्या का भरण-पोषण करने वाले कृषि क्षेत्र का सकल घरेलू आय में योगदान मात्र 20 प्रतिशत है, रामराज्य के आदर्श की प्राप्ति की दिशा में चित्रकूट में दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से नानाजी के प्रयास ग्रामीण भारत के आर्थिक और नैतिक दोनों तरह के विकास का एक सिद्ध मॉडल उपलब्ध कराता है। सबसे अहम साक्ष्य है - इस देश में, जहां 80 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या सीमांत किसानों की है, छह लोगों के परिवार के लिए ढाई एकड़ की सीमांत जोत की आर्थिक व्यवहारिक प्रदर्शित करना।

600 गांवों वाला चित्रकूट पांच भिन्न आधारों पर एक अनूठा उदाहरण है। प्रथम, यह आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदाय के आदर्श को स्थापित और सिद्ध करता है। दूसरे, यह सरकारी नीतियों के क्रियान्वयन और उसका परिणाम वांछित वर्ग तक पहुंचाने की प्रणाली में मौजूद एक अहम अंतर को पाटता है, तीसरे, इसका जोर गांवों को सदा के लिए निर्भर बनाने के बजाए आत्मनिर्भर बनाने पर है। चौथे, पूरी प्रक्रिया सारे क्रियाकलापों और गतिविधियों को परिभाषित करके, अंगीकृत करके और उसे अमल में लाकर चलाई गई है, जिसे वांछित परिणामों की दृष्टि से नियमित तौर पर आंका और परखा जाता है। इससे एक ऐसा मॉडल तैयार हो जाता है, जिसे देश भर में कहीं भी लागू किया जा सकता है। पांचवे और संभवतः सबसे महत्वपूर्ण तौर पर है, सारी गतिविधियों का उच्च स्तर की नैतिकता में पगा होना जो कि रामराज्य का एक मूलभूत गुण है और हमारी राजनीति के नैतिक उन्नयन का एक मंच है।

तथ्यों पर विचार करें- 1991 में जब नानाजी ने चित्रकूट में कदम रखे थे, तो यह एक अर्ध-शुष्क क्षेत्र था, जो उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बीच में फैला हुआ था और जहां भूमिगत जल का स्तर 250 से 300 फीट की गहराई पर था, एक फसल वाली सीमांत जोत थी, लोगों को बार-बार जल-जनित रोग होते थे और प्रवास पर जा चुके लोगों द्वारा घर भेजी जाने वाली रकम के बिना टिकाऊ जीवनयापन असंभव था।

The Indian EXPRESS

Nanaji made self-reliance work

Chitrakoot, where Nanaji Deshmukh spent the last two decades of his life after giving up politics, demonstrates the viability of Mahatma Gandhi's ideal of self-reliant village communities. A model of development for rural India can be found in his selfless service

आज न केवल प्रवास पर जाना रुक गया है, बल्कि लोग अपने घर लौटने लगे हैं और सीमांत जोत (1.5 एकड़ सिंचित और 2.5 एकड़ असिंचित) अब छह लोगों के परिवार का जीवनयापन कर रही है। नानाजी ने भगवान राम के वनवास से प्रेरित होकर चित्रकूट का चयन किया था, जिन्होंने शासन की शक्ति के बिना ही दमित और परेशान वर्गों को आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का मार्ग दिखाया था। वह अपने निकट मित्र पं दीनदयाल उपाध्याय की विचारधारा से प्रेरित थे। यह मॉडल, अपेक्षाकृत छोटे पैमाने पर उत्तरप्रदेश के गोंडा और महाराष्ट्र के बीड में दोहराया गया है। सारी गतिविधियों का अभिकेन्द्र एक स्नातक दंपति है, जिसे समाज शिल्पी दंपति कहा जाता है। वे गांव में रहते हैं और पांच गांवों के एक वर्ग का दायित्व उन पर होता है। दीनदयाल शोध संस्थान के सारे कार्यक्रम इस स्नातक दंपति के जरिए क्रियान्वित होते हैं। वे लोग प्रत्येक क्रियाकलाप और उसके परिणामों को दर्ज करते हैं, अपने दायित्व क्षेत्र के ग्रामीणों को शिक्षा और सरकारी कार्यक्रमों और योजनाओं तक पहुंचने में समर्थ बनाने के लिए जिम्मेदार होते हैं और सावधानीपूर्वक की गई प्रविष्टियों के लिए जिम्मेदार होते हैं, जो आकलन और आयोजना के लिए महत्वपूर्ण आंकड़ों का स्रोत होती हैं।

जिस ढंग से आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण का विस्तार किया गया है, वह विभिन्न क्षेत्रों में चल रही योजनाओं से स्पष्ट है। लोगों के साधारण रोगों का उपचार आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा से किया जाता है। स्थानीय तौर पर उपलब्ध आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों और उनकी औषधियों को एक सचल चिकित्सा किट में रख कर समाज शिल्पी दंपतियों को सौंप दिया जाता है। 10,000 की जनसंख्या पर एक डॉक्टर की उपलब्धता को देखते हुए साधारण रोगों के उपचार की दृष्टि से यह मंहगी अंग्रेजी दवाइयों की तुलना में ज्यादा व्यावहारिक होती है। आयुर्वेद में शोध का काम टाटा द्वारा वित्तपोषित एक संस्थान में किया जाता है, जहां नई औषधियां विकसित की जाती हैं। रोचक बात यह है कि जेआरडी टाटा आरोग्यधाम संस्थान ने एक रुपए से भी कम लागत वाली लकड़ी के गर्म कोयले से पानी को साफ करने की एक विधि विकसित की है, जो बाजार में उपलब्ध टाटा के अपनी जल साफ करने की प्रणाली से भी सस्ती है। उद्देश्य यह है कि चिकित्सा उत्पादों को बाजार में लाने का काम और तेज किया जाए, जिससे इस काम को भी एक लाभ देने वाले केन्द्र में बदला जा सके।

कृषि उपज और उत्पादकता का यह कायाकल्प एक प्रभावी वाटरशेड प्रबंधन के जरिए संभव हो सका है, जिसमें सरकारी अनुदानों और आईसीएआर के कृषि विज्ञान केन्द्रों का प्रयोग किया गया है। कृषि विज्ञान केन्द्रों की जल-संचय तकनीकों ने अद्भुत परिणाम दिखाए हैं, कुछ स्थानों पर भूमिगत जल का स्तर 150 फीट तक बढ़ गया है, जिससे सिंचाई और उसके फलस्वरूप कई फसल लेना संभव हो सका है। कई फसल उपजाने के अलावा सीमांत जोत की व्यवहार्यता साथ-साथ फल उगाने और पशुपालन के जरिए बढ़ाई गई है। समाज शिल्पी दंपतियों के नियमित हस्तक्षेप और देखरेख के जरिए दीनदयाल शोध संस्थान सिंचित और असिंचित दोनों किस्म के सीमांत जोत वालों के लिए विभिन्न आर्थिक गतिविधियों (फसल, फल और सब्जियां, पशुपालन) के एक आदर्श संतुलन को स्थापित कर सका है। इस उपलब्धि के महत्व को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है।

इस उत्पाद के मूल्य संवर्धन की श्रृंखला आगे बढ़ती है उद्यमिता विद्यापीठ से, जहां वाणिज्यिक विक्रो के लिए कृषि उत्पादों को प्रसंस्करित और पैकेज किया जाता है। प्रत्येक गतिविधि को आत्मावलंबी बनाने की नानाजी की दृष्टि के अनुरूप भूमिहीन श्रमिकों को प्रशिक्षण देते हैं, जहां उन्हें स्वसहायता समूह बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी नवीन गुरुकुल प्रणाली अपनाई गई है। प्रत्येक गुरुकुल में 80 बच्चे रहते हैं और सेवानिवृत्त दंपति 10 बच्चों का ध्यान रखते हैं। इन सारी गतिविधियों का सबसे अहम पक्ष है प्रत्येक मोड़ पर प्रबंधन के तरीके और संसाधनों का सुधार सुनिश्चित करना जो व्यापक स्तर पर सूचना प्रबंधन और आयोजन से सुनिश्चित होती है। नानाजी की दूरदृष्टि में ऐसी टीम का निर्माण भी शामिल था, जो उनके सपनों को क्रियान्वित कर सके और उनकी विरासत को आगे बढ़ा सके। उनके उत्तराधिकारियों में वसंत पंडित और डा. भरत पाठक, डा. नंदिता पाठक और जेह वाडिया शामिल हैं। यह बताना अहम है कि नानाजी ने चित्रकूट में 1991 में कदम रखे थे, जब उनकी अवस्था 77 वर्ष की थी। इस संक्षिप्त अवधि में ही उन्होंने आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदाय की व्यवहार्यता को सिद्ध कर दिखाया। हमारे नीतिनिर्माता ग्रामीण समुदाय को पहले ही भूल चुके हैं, उन्हें सिर्फ नरेगा जैसी पैसे बांटने की योजनाओं के लायक समझते हैं, जो उन्हें सशक्त बनाने की बजाए सदा के लिए निर्भर बना देने वाली होती है। दुर्भाग्य से, आज के राजनैतिक वर्ग के लिए राजनीति एक व्यवसाय है, जिसका सारा जोर ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने पर है, ताकि अपने विरोधियों को पैसे के जोर से या विभाजित करके पराजित किया जा सके। इस राजनीति में नानाजी की उपलब्धियों को लगातार अनदेखी की जाती है। ■